



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पारिवारिक वातावरण और आत्म-अवधारणा का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव

Km. Komal

Research Scholar, (Education), Bhagwant University Ajmer, Rajasthan, India

Dr. Neeru Verma

Research Guide, Bhagwant University Ajmer, Rajasthan, India

Email id: - komaleducationph.dbu@gmail.com

सारांश

किशोरावस्था मानव जीवन का संवेदनशील और संक्रमणकालीन चरण है, जिसमें व्यक्तित्व, आत्म-अवधारणा और सामाजिक व्यवहार का विकास होता है। इस समय परिवार का वातावरण और किशोर की आत्म-अवधारणा उनके सामाजिक व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। एक सकारात्मक, सहयोगी और स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण किशोरों में सहानुभूति, नैतिक संवेदनशीलता, सामाजिक कौशल और जिम्मेदार व्यवहार के विकास में सहायक होता है। इसके विपरीत, तनावपूर्ण, असंतुलित या उपेक्षापूर्ण पारिवारिक वातावरण किशोरों में आक्रामकता, विद्रोह, जोखिम भरे व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को जन्म दे सकता है। आत्म-अवधारणा, जो व्यक्ति के स्वयं के प्रति दृष्टिकोण और आत्म-मूल्यांकन को दर्शाती है, भी सामाजिक व्यवहार का निर्धारण करती है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर आत्मविश्वासी, सामाजिक रूप से सक्षम और जीवन में संतुष्ट होते हैं, जबकि नकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर सामाजिक चिंता, आत्म-इनकार, अलगाव और असामाजिक प्रवृत्तियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। आत्म-अवधारणा की स्पष्टता, परिवार और साथियों से मिलने वाला सामाजिक समर्थन, और संज्ञानात्मक विकास किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर इसके प्रभाव को और मजबूत या कमजोर कर सकते हैं। यह अध्ययन पारिवारिक वातावरण और आत्म-अवधारणा के परस्पर संबंधों और उनके किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव को स्पष्ट करता है, जिससे सकारात्मक विकास और मानसिक



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

तथा सामाजिक कल्याण के लिए उचित हस्तक्षेप और मार्गदर्शन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

शब्दकुंजी— किशोरावस्था, पारिवारिक वातावरण, आत्म-अवधारणा, सामाजिक व्यवहार, मानसिक स्वास्थ्य, सहानुभूति, सामाजिक कौशल, सकारात्मक विकास।

प्रस्तावना

किशोरावस्था मानव जीवन का अत्यंत संवेदनशील और संक्रमणकालीन चरण है, जिसमें व्यक्तित्व निर्माण, आत्म-अवधारणा और सामाजिक व्यवहार की नींव रखी जाती है। इस अवधि में पारिवारिक वातावरण की भूमिका निर्णायक होती है क्योंकि परिवार ही किशोरों के लिए पहला सामाजिक परिवेश प्रदान करता है। परिवार के सदस्यों के बीच का व्यवहार, आपसी सहयोग, भावनात्मक समर्थन, अनुशासन की पद्धति और संवाद का स्वर किशोरों के व्यक्तित्व एवं आत्म-अवधारणा पर गहरा प्रभाव डालते हैं। आत्म-अवधारणा, जो व्यक्ति के स्वयं के प्रति दृष्टिकोण और आत्म-मूल्यांकन को दर्शाती है, किशोरों के सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण आयाम है। सकारात्मक पारिवारिक वातावरण और प्रोत्साहनपूर्ण आत्म-अवधारणा किशोरों को आत्मविश्वासी, सहानुभूतिपूर्ण, सहयोगी तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाती है, जबकि उपेक्षापूर्ण, असंतुलित या तनावपूर्ण वातावरण तथा नकारात्मक आत्म-अवधारणा किशोरों को अंतर्मुखी, आक्रामक, विद्रोही या असामाजिक व्यवहार की ओर प्रेरित कर सकती है। आधुनिक युग में बदलते पारिवारिक ढांचे, व्यस्त जीवनशैली और संचार की कमी किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं। अतः यह अध्ययन पारिवारिक वातावरण और आत्म-अवधारणा के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि ये दोनों तत्व किस प्रकार किशोरों के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

पारिवारिक वातावरण और आत्म-अवधारणा की परिभाषा

पारिवारिक वातावरण



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पारिवारिक वातावरण वह सामाजिक और भावनात्मक परिवेश है, जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है, पनपता है और अपने जीवन के प्रारंभिक अनुभव अर्जित करता है। यह केवल भौतिक सुविधाओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंध, संवाद का स्वरूप, अनुशासन की पद्धति, भावनात्मक सहयोग और मूल्य प्रणाली जैसे पहलुओं को भी समाहित करता है। परिवार ही वह पहला संस्थान है, जहाँ बच्चा सामाजिक नियमों, परंपराओं और नैतिक मूल्यों को सीखता है। यदि परिवार का वातावरण सहयोगी, स्नेहपूर्ण और संतुलित होता है तो यह बच्चे के आत्मविश्वास, सामाजिक व्यवहार और सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायक होता है। वहीं यदि वातावरण तनावपूर्ण, उपेक्षापूर्ण या असंतुलित हो, तो यह बच्चे में असुरक्षा, आत्महीनता और आक्रामकता जैसी प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक अनुकूलन क्षमता के निर्धारण में केंद्रीय भूमिका निभाता है।



आत्म-अवधारणा

आत्म-अवधारणा से आशय व्यक्ति की स्वयं के प्रति धारणा और मूल्यांकन से है। यह उस मानसिक ढांचे को दर्शाती है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमताओं, कमजोरियों, गुणों और व्यक्तित्व को समझता है। सरल शब्दों में आत्म-अवधारणा व्यक्ति की “मैं कौन हूँ?” की आंतरिक परिभाषा है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा रखने वाला व्यक्ति आत्मविश्वासी, आशावादी और समाजोपयोगी होता है। वह चुनौतियों का सामना दृढ़ता से करता है और

सामाजिक संबंधों में सहयोगी एवं जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाता है। इसके विपरीत नकारात्मक आत्म-अवधारणा वाला व्यक्ति स्वयं को कमतर आंकता है, निर्णय लेने में असुरक्षित रहता है और अक्सर सामाजिक रूप से पीछे हटने या आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति रखता है। किशोरावस्था में आत्म-अवधारणा का विकास विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी अवधि में पहचान, आत्मसम्मान और सामाजिक स्वीकृति की आवश्यकता प्रबल होती है।



सामाजिक व्यवहार के निर्धारक तत्व

सामाजिक व्यवहार से तात्पर्य व्यक्ति के उस आचरण से है जो वह समाज में रहते हुए अन्य लोगों, समूहों या संस्थाओं के प्रति प्रदर्शित करता है। यह व्यवहार केवल व्यक्तिगत स्वभाव का परिणाम नहीं होता, बल्कि अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है। सामाजिक व्यवहार के निर्धारक तत्वों को समझना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति समाज में किस प्रकार अनुकूलन करता है, किस प्रकार संबंध बनाता है और किन परिस्थितियों में सकारात्मक अथवा नकारात्मक व्यवहार करता है।

1. पारिवारिक वातावरण— परिवार सामाजिक व्यवहार का प्रथम और सबसे प्रभावी निर्धारक है। माता-पिता का अनुशासन, आपसी संबंध, संवाद की शैली और भावनात्मक सहयोग बच्चों के व्यवहार को सीधे प्रभावित करते हैं। सहयोगपूर्ण और स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण बच्चों में सहानुभूति, सहयोग और समाजोपयोगी प्रवृत्तियाँ विकसित करता है, जबकि तनावपूर्ण या उपेक्षापूर्ण वातावरण आक्रामकता और विद्रोह को जन्म दे सकता है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

2. आत्म-अवधारणा और व्यक्तित्व- व्यक्ति का स्वयं के प्रति दृष्टिकोण और उसका व्यक्तित्व सामाजिक व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले व्यक्ति आत्मविश्वासी, सहकारी और सामाजिक होते हैं, जबकि नकारात्मक आत्म-अवधारणा उन्हें अंतर्मुखी, संकोची या आक्रामक बना सकती है।

3. शिक्षा और बौद्धिक स्तर- शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक मानदंडों और मूल्यों की समझ देती है। उच्च शिक्षा और बौद्धिक क्षमता सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने में सहायक होती है।

4. सामाजिक-आर्थिक स्थिति- परिवार की आय, व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों के बच्चे अक्सर आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से सक्रिय होते हैं, जबकि आर्थिक कठिनाइयों से जूझने वाले परिवारों के बच्चे कभी-कभी असुरक्षा या हताशा से प्रभावित हो सकते हैं।

5. सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य- संस्कृति और धर्म व्यक्ति को नैतिक मानदंड, परंपराएँ और आचरण के नियम प्रदान करते हैं। यह व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित और दिशा-निर्देशित करते हैं।

6. मित्र मंडली और साथियों का प्रभाव- किशोरावस्था और युवावस्था में मित्र समूह व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। अच्छे साथियों के साथ रहने से सकारात्मक आदतें और सामाजिक गुण विकसित होते हैं, जबकि नकारात्मक साथियों का प्रभाव असामाजिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है।

7. सामाजिक संस्थाएँ और माध्यम- विद्यालय, समाज, संचार माध्यम और सोशल मीडिया व्यक्ति के विचारों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक संदेश समाजोपयोगी व्यवहार को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि नकारात्मक या भ्रामक संदेश असामाजिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे सकते हैं।

पारिवारिक वातावरण का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पारिवारिक वातावरण किशोरों के सामाजिक व्यवहार को विकसित करने में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। किशोरावस्था वह संवेदनशील अवधि है जब व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, सामाजिक कौशल और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को आकार देता है। परिवार वह पहला सामाजिक मंच होता है जहाँ किशोर विभिन्न सामाजिक और नैतिक मूल्यों को सीखते हैं। एक सुरक्षित और सहायक पारिवारिक वातावरण किशोरों में सकारात्मक सामाजिक व्यवहार, सहानुभूति और नैतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है, जबकि पारिवारिक संघर्ष, कठोर या असंगत पालन-पोषण, माता-पिता की बेरोजगारी, आर्थिक तनाव और बच्चों की कमजोर निगरानी जैसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ जोखिम भरे व्यवहारों और नकारात्मक सामाजिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकती हैं।

सकारात्मक प्रभाव

- 1. सहानुभूति और नैतिक संवेदनशीलता—** एक सकारात्मक पारिवारिक वातावरण किशोरों में दूसरों की भावनाओं को समझने और उनकी मदद करने की क्षमता को बढ़ाता है। माता-पिता के साथ स्नेहपूर्ण और सहयोगी संबंध किशोरों को नैतिक निर्णय लेने और सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवहार अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सहानुभूति और नैतिक संवेदनशीलता किशोरों के सामाजिक व्यवहार की नींव के रूप में काम करती हैं।
- 2. सामाजिक कौशल का विकास—** परिवार के भीतर भाई-बहनों और माता-पिता के साथ प्रेमपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण संबंध किशोरों को सामाजिक परिस्थितियों में अनुकूलन करने में मदद करते हैं। सकारात्मक पारिवारिक वातावरण में संवाद और सहयोग की आदतें किशोरों के सामाजिक कौशल को विकसित करती हैं, जिससे वे समूह में बेहतर सहयोग कर पाते हैं और संघर्ष को शांति से सुलझाने की क्षमता प्राप्त करते हैं।
- 3. सुरक्षित और सहायक संबंध—** माता-पिता के साथ मजबूत जुड़ाव, घर का सुरक्षित और प्रेमपूर्ण माहौल किशोरों के भावनात्मक और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक है। यह संबंध किशोरों को सामाजिक रूप से अधिक संतुलित और आत्मविश्वासी बनाता है, जिससे उनका व्यवहार सकारात्मक और जिम्मेदार होता है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

नकारात्मक प्रभाव—

1. **जोखिम भरे व्यवहारों में वृद्धि—** पारिवारिक तनाव, कठोर या असंगत पालन—पोषण, माता—पिता की बेरोजगारी और कमजोर निगरानी किशोरों में शराब या अन्य मादक पदार्थों के सेवन, अपराध और हानिकारक गतिविधियों में संलग्न होने की संभावना बढ़ा सकते हैं।
2. **अवसाद और मानसिक स्वास्थ्य—** पारिवारिक असंतुलन और संघर्ष किशोरों में अवसाद, चिंता और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकते हैं। किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक संरचना और पालन—पोषण के प्रभाव को कई अध्ययनों में प्रमाणित किया गया है।
3. **माता—पिता—किशोर संबंधों में तनाव—** पारिवारिक असहमति या माता—पिता की उपेक्षा किशोरों के साथ उनके माता—पिता के रिश्तों को प्रभावित कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप किशोर अंतर्मुखी, विद्रोही या आक्रामक व्यवहार करने लगते हैं।
4. **सामाजिक—आर्थिक तनाव—** निम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में किशोर अधिक हानिकारक व्यवहारों जैसे धूम्रपान और शराब पीने की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं। आर्थिक दबाव और संसाधनों की कमी किशोरों में सामाजिक और भावनात्मक तनाव को बढ़ाती है। सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। सकारात्मक पारिवारिक वातावरण किशोरों में सहानुभूति, नैतिक संवेदनशीलता और सामाजिक कौशल का विकास करता है, जिससे वे जिम्मेदार और समाजोपयोगी नागरिक बनते हैं। इसके विपरीत, प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियाँ किशोरों को जोखिम भरे और असामाजिक व्यवहारों की ओर प्रेरित कर सकती हैं। इसलिए, परिवार के सदस्यों के सहयोग, संवाद और समर्थन की गुणवत्ता किशोरों के सामाजिक समायोजन और स्वस्थ व्यक्तित्व विकास के लिए निर्णायक होती है।

आत्म—अवधारणा का किशोरों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव

आत्म—अवधारणा से तात्पर्य व्यक्ति की स्वयं के प्रति धारणा, विश्वास और मूल्यांकन से है। यह किशोरावस्था में सामाजिक व्यवहार के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

किशोर, इस चरण में अपनी पहचान, क्षमताओं और सीमाओं के बारे में सोचने लगते हैं, और उनके आत्म-मूल्यांकन का स्तर उनके सामाजिक संपर्क, निर्णय क्षमता और भावनात्मक प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर अपने आप में विश्वास रखते हैं, जबकि नकारात्मक आत्म-अवधारणा या कम आत्म-सम्मान वाले किशोर अक्सर सामाजिक मूल्यांकन और आलोचना से डरते हैं।

सकारात्मक प्रभाव

- 1. मजबूत सामाजिक संबंध—** सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर खुद को सक्षम और योग्य मानते हैं, जिससे वे सहकर्मियों और दोस्तों के साथ स्वस्थ और सकारात्मक संबंध स्थापित करते हैं। उनका आत्मविश्वास उन्हें समूह में बेहतर संवाद करने और सहयोग करने में सक्षम बनाता है।
- 2. बेहतर सामाजिक मुकाबला—** ऐसे किशोर जीवन में आने वाली नकारात्मक परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने में अधिक सक्षम होते हैं। उनका सकारात्मक आत्म-दृष्टिकोण तनावपूर्ण परिस्थितियों को अधिक संतुलित और सकारात्मक तरीके से संभालने में मदद करता है।
- 3. सामाजिक चिंता में कमी—** आत्म-अवधारणा की स्पष्टता और सकारात्मकता किशोरों में सामाजिक चिंता को कम करती है। ये किशोर सामाजिक परिस्थितियों में अधिक सहज और आत्मविश्वासी महसूस करते हैं, जिससे उनकी सामाजिक सहभागिता बढ़ती है।
- 4. उच्च जीवन संतुष्टि—** सकारात्मक आत्म-अवधारणा किशोरों के कल्याण (मसस-इमपदह) और जीवन संतुष्टि के स्तर से जुड़ी होती है। ये किशोर अधिक सकारात्मक भावनाओं का अनुभव करते हैं और जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण में संतुलन और संतोष होता है।

नकारात्मक प्रभाव

- 1. कम आत्म-सम्मान और सामाजिक चिंता—** नकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर खुद को अयोग्य और अक्षम मानते हैं, जिससे वे सामाजिक मूल्यांकन से डरते हैं और सामाजिक स्थितियों से बचने लगते हैं।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

2. **आत्म-इनकार और आत्म-तिरस्कार-** ऐसे किशोर खुद को अस्वीकार करते हैं और आत्म-तिरस्कार प्रदर्शित कर सकते हैं, जिससे उनकी मानसिक और भावनात्मक स्थिति प्रभावित होती है।

3. **सामाजिक अलगाव-** नकारात्मक आत्म-अवधारणा किशोरों को सामाजिक रूप से अलगाव महसूस करने के लिए प्रेरित कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप उनका सामाजिक व्यवहार सीमित हो जाता है और वे सामाजिक कौशल विकसित करने में असफल रहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण कारक

1. **आत्म-अवधारणा की स्पष्टता-** जब किशोर अपनी आत्म-अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझते हैं, तो वे बाहरी जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से संसाधित करते हैं और नकारात्मक अनुभवों से निपटने में सक्षम होते हैं।

2. **सामाजिक समर्थन-** परिवार, शिक्षक और साथी किशोर को सामाजिक समर्थन प्रदान करके उनकी आत्म-अवधारणा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

3. **संज्ञानात्मक विकास-** किशोरावस्था में तंत्रिका-संज्ञानात्मक विकास आत्म-चेतना और साथियों के प्रभाव के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है, जो आत्म-अवधारणा और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंध को प्रभावित करता है।

स्पष्ट है कि आत्म-अवधारणा किशोरों के सामाजिक व्यवहार के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। सकारात्मक आत्म-अवधारणा किशोरों को सामाजिक रूप से सक्षम, आत्मविश्वासी और जीवन में संतुष्ट बनाती है। इसके विपरीत, नकारात्मक या अस्पष्ट आत्म-अवधारणा सामाजिक चिंता, अलगाव और जोखिम भरे व्यवहारों की संभावना को बढ़ा सकती है। इसलिए किशोरों के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए उनके आत्म-मूल्यांकन और आत्म-अवधारणा का संतुलित और सकारात्मक विकास सुनिश्चित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोरावस्था एक संवेदनशील और महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार और आत्म-अवधारणा का विकास होता है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पारिवारिक वातावरण और आत्म-अवधारणा इस अवधि में किशोरों के सामाजिक और भावनात्मक विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। सकारात्मक, सहयोगी और स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण किशोरों में सहानुभूति, सामाजिक कौशल, जिम्मेदारी और नैतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है, जबकि तनावपूर्ण, उपेक्षापूर्ण या असंतुलित पारिवारिक परिस्थितियाँ आक्रामकता, विद्रोह और जोखिम भरे व्यवहारों को जन्म दे सकती हैं। इसी प्रकार, सकारात्मक आत्म-अवधारणा वाले किशोर आत्मविश्वासी, सामाजिक रूप से सक्षम और जीवन में संतुष्ट होते हैं, जबकि नकारात्मक आत्म-अवधारणा उन्हें सामाजिक चिंता, अलगाव और मानसिक असंतुलन की ओर प्रवृत्त कर सकती है। अतः किशोरों के सामाजिक समायोजन और स्वस्थ व्यक्तित्व विकास के लिए यह आवश्यक है कि परिवार सहयोग, संवाद और भावनात्मक समर्थन प्रदान करे तथा किशोरों की आत्म-अवधारणा को सकारात्मक और सुदृढ़ बनाने के उपाय अपनाए जाएँ।

संदर्भ ग्रन्थ सुची

1. सूद, एस., और गुप्ता, ए. (2024)। जीवन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य और आत्म-अवधारणा पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव की खोज: एक व्यापक विश्लेषण। अफ्रीकन जर्नल ऑफ बायोमेडिकल रिसर्च, 27(3एस), 49–62।
2. यादव, आर.के., और सोनकर, डी.के. (2024)। युवा का सामाजिक व्यवहार. IJEETE जर्नल ऑफ रिसर्च, 11(2), 7–11।
3. शर्मा, एच., और भटनागर, एस. (2024)। किशोर एवं किशोरियों के व्यक्तित्व पर पारिवारिक माहौल का सामाजिक, आर्थिक स्तर पर प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन। शोधकोश: जर्नल ऑफ रिसर्च, 5(4)।
4. शर्मा, जी.के., और गुप्ता, एस. (2022)। छात्रों की स्टार्टअप उपलब्धि पर पारिवारिक माहौल के प्रभाव का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाइड साइंस एंड सोशल साइंस (IJEMASS), 4(1-II), 45–48।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

5. पलेंजुएला-लुइस, एन., डुआर्टे-विलमेंट्स, जी., गोमेज़-सालगाडो, जे., रोड्रिगज़-गोमेज़, जे. ए., और सांचेज़-गोमेज़, एम.बी. (2022)। आत्म-अवधारणा में आत्म-अवधारणा, आत्म-धारणा और व्यक्तित्व का अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन: एक प्रणालीगत समीक्षा खकेशोरो में आत्म-अवधारणा, आत्म-धारणा और जीवनशैली की अंतर्राष्ट्रीय तुलना: एक व्यवस्थित समीक्षा,। इंट. जे. सार्वजनिक स्वास्थ्य, 67, अनुच्छेद 1604954।
6. चायना, के. (2022)। पर्यावरण का उद्यम के भवन निर्माण में योगदान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी ट्रेंड्स, 4(1), 100–101।
7. वर्मा मोहन, आर., और प्रभाकर, पी. (2020)। मित्र का सामाजिक व्यवहार एवं समाधान: समस्याएँ एवं समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, 5(3), 39–43।
8. क्रॉस, एस., ऑर्थ, यू., और रॉबिन्स, आर. डब्ल्यू. (2019)। पारिवारिक वातावरण और आत्म-सम्मान विकास: 10 से 16 वर्ष की आयु तक का एक अनुदैर्घ्य अध्ययन। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 119(2), 457–478।
9. शर्मा, डी.एन. (2018)। पारिवारिक वातावरण एवं स्टार्टअप सहयोग का संबंध – एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), 6(2), 765–769।
10. वाईब्रांड्ट, एच. (2008)। किशोरावस्था में आत्म-अवधारणा और सामाजिक कार्यप्रणाली के बीच संबंध खकेशोरावस्था में आत्म-अवधारणा और सामाजिक कार्यप्रणाली के बीच संबंध,। किशोरावस्था का जर्नल, 31(1), 1–16।